ESSENCE - International Journal for Environmental Rehabilitation and Conservation

Volume V: No. 2 2014 [81 – 83] [ISSN 0975 - 6272]

[www.essence-journal.com]

Proceedings of National Conference

"Environmental Conservation and Clean India Programme" December 2014, India

पर्यावरण का सामाजिक जीवन पर प्रभाव

Meenakshi Kumari

Received: October 17, 2014 | **Accepted**: December 06, 2014 | **Online**: December 31, 2014

पर्यावरण ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य उपहार है। यह वह बाहरी शक्ति है, जो मनुष्य के चारों ओर विद्यमान है। पर्यावरण का निर्माण पृथ्वी के इर्द–गिर्द रहने वाले विभिन्न तत्त्वों से होता हैं। इनमें पेड–पौधों व जीव–जन्तुओं के साथ–साथ जल, वायु, अग्नि और आकाश भी सम्मिलित हैं।

मानव समाज और पर्यावरण का घनिष्ठ सम्बन्ध है क्योंकि पर्यावरण की अनुकूलता और प्रतिकूलता मानव–समाज को हर पल प्रभावित करती है। जहाँ भौगोलिक पर्यावरण अनुकूल होता है, वहाँ जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है तथा प्रतिकूल में कम होता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य उसी स्थान पर रहना चाहता है, जहाँ उसे आजीविका के साधन सरलता से प्राप्त होते हैं। यदि किसी स्थान की जयवायु, ऋतुएँ, भूमि की बनावट व पानी की सुविधाएँ उत्तम हैं तो वहाँ उत्पादन सरलता से और अधिक मात्रा में होता है। परिणामस्वरूप वहाँ अधिक संख्या में व्यक्ति रहने लगते हैं। उदाहरण के लिए भारत में केवल गंगा–यमुना के मैदान में देश की कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत भाग निवास करता है क्योकि यहाँ का पर्यावरण सुविधाजनक होने के कारण उत्पादन के साधनों की प्रचुरता होती है। दूसरी ओर देश में दूर–दूर तक फैले हुए पहाड क्षेत्रों में कुल जनसंख्या का केवल 5 प्रतिशत निवास करता है।

किस स्थान पर किस प्रकार के मकान बनेगें और उन्हें बनाने में कौन–सी साम्रगी काम में लायी जायेगी– यह सभी कुछ पर्यावरण पर निर्भर करता है। गर्म प्रदेशों में बिल्कुल खुले हुए हवादार मकानों का निर्माण होता है, जबकि ठण्डे प्रदेशों में शीशे के अधिक प्रयोग के द्वारा ऐसे बन्द मकान बनाये जाते हैं, जिनमें धूप तो आ सके, हवा नहीं। टुण्ड्रा के

For correspondence:

Department of Sociology, Munnalal and Jai Narayan Khemka Girls College, Saharanpur, India

बर्फीले स्थानों और ध्रुव प्रदेशों में बर्फ के मकान बनायें जाते हैं, जबकि जापान में भूचाल के भय से लकडी के मकान बनाये जाते हैं। पहाडी क्षेत्रों में पत्थर के मकान बनाये जाते हैं, जबकि मैदानों में ईटों और कंकरीट से गगनचुम्बी भवनों का निर्माण होता है। इस प्रकार मकानों के निर्माण में वहाँ के भौगोलिक पर्यावरण का अधिक प्रभाव पडता है।

खान–पान का भी पर्यावरण से घनिष्ठ सम्बन्ध है। ठण्डे प्रदेशों के निवासी माँस, मछली, अण्डा और इसी प्रकार की दूसरी गर्म वस्तुओं का सेवन करते हैं, जबकि गर्म प्रदेशों के निवासी शाकाहारी भोजन को अधिक पसन्द करते हैं। समुद्र के किनारों के प्रदेशों जैसे– बंगाल, तमिलनाडु और केरल के निवासी मछली खाना अधिक पसन्द करते हैं, जबकि अधिक चावल उत्पन्न करने वाले देशों जैसे– बर्मा, जापान व मलाया, और इटली में चावल सबसे अधिक खाया जाता है। राजस्थान में गेंहू व चावल की कमी के कारण ज्वार व बाजरे का प्रयोग अधिक होता है, जबकि उत्तर प्रदेश और पंजाब मे गेंहूँ अधिक मात्रा में खाया जाता है।

प्रत्येक समूह के लोगो की वेष–भूषा पर भी पर्यावरण का विशेष प्रभाव पडता है। जिन प्रदेशों में बहुत ठण्ड पडती है, वहाँ व्यक्ति चमडे, खालों और उन के बने चुस्त कपडों का प्रयोग करते हैं, जबकि गर्म प्रदेशों में ढीले कपडों का विशेष महत्व है। इस प्रकार व्यक्तियों का पहनावा पर्यावरण द्वारा पूरी तरह प्रभावित होता है।

सामाजिक संस्थाओं का रूप भी पर्यावरण के अनुसार ही निर्धारित होता है। सामाजिक संस्थाओं में हम प्रमुख रूप से परिवार, विवाह, परम्पराओं, सामाजिक अधिकारों की व्यवस्था तथा सामूहिक जीवन को सम्मिलित करते हैं। यह विश्वास किया जाता है कि जिस स्थान पर धनोपार्जन के लिए व्यक्तियों को मिल–जुलकर प्रकृति पर विजय पाने के लिये अधिक प्रयत्न करने पडते हैं, वहाँ संयुक्त परिवारों का विकास होता है, जैसे– भारतीय ग्रामों में संयुक्त परिवार पाये जाते हैं। इसके विपरीत जलवायु अनुकूल होने की दशा में एकाकी अथवा मूल परिवारों का विकास होता हैं। इसके अतिरिक्त जहाँ जीविकोपार्जन का एक कठिन कार्य होता है, वहाँ एक स्त्री अनेक पुरुष की सहायता से कार्य करती है अर्थात् वहाँ बहुपति विवाह का प्रचलन हो जाता है। दूसरी ओर पर्यावरण मनुष्य के पक्ष में होने पर बहुपत्नी विवाह को भी बुरा नही समझा जाता है। प्रतिकूल होने पर अंधविश्वासों में वृद्धि होती है, जबकि अनुकूल पर्यावरण में मानवीय श्रम को सर्वोच्च स्थान मिलने लगता है । इसके अतिरिक्त प्रतिकूल हीने पर अधिकांश सामाजिक आधिकार युवा वर्ग के हाथों में रहते हैं, पर्यावरण को व्यक्ति के पक्ष में होने पर वृद्ध व्यक्तियों को अपेक्षाकृत उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त होती है।

किसी देश के आर्थिक संगठनों पर भी पर्यावरण का विशेष प्रभाव देखने को मिलता है। आर्थिक जीवन का सम्बन्ध विशेषकर तीन संस्थाओं से है–

1 उद्योग–धन्धे

2 व्यवसाय

3 सम्पति का संचय।

सर्वप्रथम यह कहा जाता है कि पर्यावरण ही उद्योग धन्धें की प्रकृति और उनके विकास को निर्धारित करता है। किसी देश में केवल वही उद्योग आरम्भ किये जा सकते हैं, जिनके लिए प्रकृति ने वहीं कच्चा माल प्रदान किया हो। उदाहरण के लिए शक्कर का उद्योग बिना गन्ने के उत्पादन के विकसित नहीं हो सकता । लोहे का उद्योग देश में लोहे की खाने होने पर ही सम्भव हो सकता है। इसके अतिरिक्त , व्यवसाय की प्रकृति को भी पर्यावरण प्रभवित करता है। जहाँ केवल भूमि ही आजीविका का साधन है वहां कृषि व्यक्तियों का प्रमुख व्यवसाय होता है। दूसरी ओर जिन स्थानों पर खनिज पदार्थो की अधिकता है, वहाँ विभिन्न प्रकार के उद्योगों का केन्द्रीयकरण होता जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि आर्थिक जीवन को उन्नत बनाने में पर्यावरण का महत्व सबसे अधिक है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि पर्यावरण का सामाजिक जीवन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ता है आज का प्रदूषित पर्यावरण भी जन–जन को हानि पहुचाँ रहा है। बढ़ते कल–कारखाने, यातायात क साधन, नगरीकरण , आणविक कचरे का प्रवाह, नदियों का प्रदूषित जल और प्राकृतिक चक्रानुक्रम का परिवर्तन आदि प्रदूषण के कारण हैं। जल प्रदूषण , वायु प्रदूषण और पर्यावरणीय असंतुलन ने मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है। इससे विभिन्न प्रकार की नयी–नयी बीमारियाँ जन्म ले रही है। कैंसर और अस्थमा जैसी बीमारियों के साथ–साथ तूफान , भूकम्प और भूस्खलन आदि भी अपना पूरा प्रभाव दिखा रहे हैं। इन सबसे बचने हेतु यद्यपि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत प्रयास किये जा रहे हैं परन्तु सबसे अधिक आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति के जागरूक होने की है।